उत्तरमाला

खण्ड 'अ' – वस्तुपरक प्रश्न

1.	(1) (अ)	(2) (ब)	(3) (अ)	(4) (द)	(5) (स)
	अथवा				
	(1) (ब)	(2) (द)	(3) (स)	(4) (द)	(5) (द)
2.	(1) (अ)	(2) (ब)	(3) (द)	(4) (स)	(5) (द)
	अथवा				
	(1) (अ)	(2) (द)	(3) (ब)	(4) (अ)	(5) (ब)
3.	(1) (स)	(2) (स)	(3) (द)	(4) (अ)	(5) (द)
4.	(1) (द)	(2) (ब)	(3) (स)	(4) (स)	(5) (ब)
5.	(1) (ब)	(2) (स)	(3) (स)	(4) (ब)	(5) (द)
6.	(1) (स)	(2) (द)	(3) (स)	(4) (द)	(5) (स)
7.	(1) (ब)	(2) (द)	(3) (स)	(4) (द)	(5) (स)
8.	(1) (द)	(2) (ब)			
9.	(1) (स)	(2) (ब)	(3) (स)	(4) (स)	(5) (स)
10.	(1) (द)	(2) (ब)			

खण्ड 'ब' – वर्णनात्मक प्रश्न

11.

(अ) पानवाले की यह टिप्पणी बहुत अभद्र है। इससे हमारे मन में उसके प्रति क्रोध और घृणा की भावना उत्पन्न होती है। अपने इस कथन में उसने चश्मेवाले की देशभक्ति का मजाक उड़ाया है। इस प्रकार उसने देश और मानवीय मूल्यों का अपमान किया है। चश्मेवाला एक बूढ़ा और अपाहिज़ व्यक्ति है, ऐसे व्यक्ति का मज़ाक उड़ाना मानवता पर कलंक है।

(ब) बालगोबिन भगत एक सद्‌गृहस्त थे, परंतु उनका व्यक्तित्व भक्तों की तरह था। साठ वर्ष के भगत बेहद कम कपड़े पहनते थे। सरदियों में एक काला कंबल ओढ़ लेते थे। वे मँझले कद के गोरे-चिट्ठे आदमी थे। उनके सारे बाल सफेद हो गए थे, इससे उनका चेहरा जगमगाता-सा लगता था। उनके माथे पर रामानंदी चंदन सुशोभित होता था, जो नाक के किनारे से शुरू होता था। उनके गले में तुलसी की एक माला बँधी रहती थी। भगत सिर पर कबीरपंथियों की एक कनफटी टोपी भी धारण किए रहते थे और सदा ही खँजड़ी की लय, पर प्रभु भक्ति के गीत गाते रहते थे। भगत एक सच्चे साधु थे।

(स) हम लेखक के इस विचार से बिलकुल भी सहमत नहीं है कि बिना विचार, घटना और पात्रों के कहानी लिखी जा सकती है। विचार, घटना तथा पात्र किसी भी कहानी के लिए उसके प्राण तत्व होते है। लेखक ने यह बात व्यंग्य में कही है। वास्तव में वे यही बताना चाहते है कि बिना विचार, घटना और पात्रों के कहानी नहीं लिखी जा सकती। जो इनके बिना कहानी लिखने का दावा करते है वे लेखक उसी प्रकार ढोंगी है जैसे लखनवीं नवाब बिना खीरा खाए पेट भरने का ढोंग करते है।

(द) संन्यासी की एक परम्परागत छवि है, जिसके अनुसार व्यक्ति त्यागी और विरक्त होकर सभी कार्य निष्काम भाव से करता है। फादर बुल्के संकल्प से संन्यासी थे। कभी कभी लगता था कि वे मन से संन्यासी नहीं थे। वे संन्यासी होते हुए भी रिश्ता बनाते थे ओर उसे तोड़ते नहीं थे। वर्षो बाद मिलने पर भी उस रिश्ते की जीवंतता अनुभव होती थी। भाषा जैसे विषय पर उनकी चिंता किसी परम्परागत संन्यासी की चिंता न थी। परम्परागत संन्यासी को सदैव अपने कल्याण (उद्धार, मोक्ष) की चिंता रहती है, जिसके लिए वह संसार को मोह-माया का जाल समझकर उससे विरक्ति को ही अपना साधन मानता है। संसार के सुख-दुख अथवा कल्याण (उद्धार) से उसका कोई सरोकार नहीं होता, जबकि फादर बुल्के ने संन्यासी की इस परम्परागत छवि के विपरीत संसार और उसके रिश्तें नातों में लिप्त रहकर सबका कल्याण करने में ही अपना उद्धार समझा। इससे स्पष्ट है कि फादर बुल्के की अपनी अलग ही विशिष्ट छवि थी।

उ.12

(अ) सूरदास जी के इस पद का प्रत्येक शब्द व्यंय से भरा है। हरि है राजनीति पढ़ि आए पक्ति में गोपियों द्वारा कृष्ण पर तीखा व्यंग्य किया गया है। समाचार सब पाए कहकर इस व्यंग्य को और अधिक तीखा कर दिया गया है। वे साथ ही उद्धव को भी आड़े हाथों लेती है कि तुम तो पहले से ही चतुर चालक थे, अब तो गुरु कुष्ण से राजनीति भी सीख ली है अत: तुम्हारी बाते छल कपट से भर गई है। जब गुरु पंथ पढ़ाए, 'बढ़ी बुद्धि जानी और ऊधौ भले लोग आगे कहकर वे कृष्ण पर सीधे वार करने से भी नहीं चुकती। इस प्रकार पूरा 'पद' व्यंग्य से भरपूर है। वक्रोकित अलंकार का सहारा लेकर गोपियों ने वाक्चातुर्य का अनोखा उदाहरण दिया है।

(ब) परशुराम जी ने अपने विषय में कहा-क्या तुम मुझे केवल मुनि ही समझते हो ? मै बालब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी हूँ। मै संपूर्ण विश्व में क्षत्रियकुल के शत्रु के रुप में विख्यात हूँ। अपनी शक्ति के बल पर मैने पृथ्वी को अनेक बार राजाओं से रहित कर दिया है और उसे ब्राह्माणों को दे दिया है। सहस्रबाहु की भुजाओं को मेरे ही फरसे ने काटा था। मेरा फरसा बड़ा भयानक है। है राजकुमार। तू इस फरसे को देख। इसकी गर्जना से गर्भस्थ शिशु भी मर जाते है। इस प्रकार परशुराम जी ने सभा स्वयं को अत्यधिक निर्दयी, क्रोधी और बलशाली बताया।

(स) 'उत्साह' वीर रस का स्थायीभाव है, जो इस कविता ही हर पंक्ति में समाहित है। यह कविता एक आह्वान गीत है। कविता में बादल एक तरफ पीड़ित-प्यासे जन की आकांक्षा को पूरा करने वाला है तो दूसरी तरफ वही बादल नई कल्पना और नए अंकुर के लिए विध्वंस, विप्लव और क्रांति-चेतना को संभव करने वाला है। आह्वान गीत उत्साह का प्रतीक होता है। बादल की गर्जना व क्रांति की चेतना लोगों में उत्साह का संचार करती है कवि कविता के माध्यम से क्रांति लाने के लिए लोगों में उत्साह का संचार करना चाहता है। इसीलिए उन्होने अपनी कविता का नाम उत्साह रखा है।

उ.13

(अ) जब भोलानाथ की मैया उसे बलपूर्वक नहलाती है और उसके सिर मे तेल लगाती है। तो वह बहुत रोता है। उसके पिता उसे गोद में लेकर घर से बाहर ले जाते हैं, वहाँ भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना भूल जाता है। इसी प्रकार जब पाठशाला में गुरु जी द्वारा मार खाकर वह बहुत रोता है तो पिता जी उसे घर ले आते है। रास्ते में वह अपने साथियों को देखता है, जो चिड़ियों के झुंड से खेल रहे होते हैं उन्हें देखकर भोलानाथ रोना-सिसकना भूलकर उनके साथ खेलने लगता है। इसका कारण बच्चे की स्वाभाविक बालमनोवृत्ति है। बच्चे को अपने खेल-खिलौने और साथी बहुत प्रिय होते है। उनके बीच में वह अपना सारा दुख-दर्द भूल जाता है। यही कारण है कि अपने साथियों को देखकर भोलानाथ सिसकना भूल जाता है।

(ब) रानी के दरजी की परेशानी का कारण यह था कि रानी भारत, पाकिस्तान और नेपाल के दौरे पर जा रही थीं। उसे इन देशों के मौसम और पहनावे के अनुरुप पोशाकें तैयार करनी थीं। रंग-चयन में विशेष सावधानी रखनी थी। रानी इस यात्रा पर अपने देश का प्रतिनिधित्व कर रही थीं, इसलिए पोशाकों का उनके व्यक्तित्व और मर्यादा के अनुकुल होना आवश्यक था: हमारे विचार से उसकी परेशानी उचित थी: क्योंकि रानियाँ बहुत तुनक मिजाज होती है। छोटी-सी गलती भी हो जाती तो उसे रानी का कोपभाजन बनना पड़ सकता था।

(स) प्रकृति ने जल-संचय की अदुभुत व्यवस्था की है। उसने जल को पर्वत-शिखरों पर संचित किया है। समुद्र से जो जल बादलों के रुप में उठता है, वह सरदियों में पर्वत-शिखरों पर बर्फ के रुप में जम जाता है। गरमियों में यही बर्फ पिघलकर झरनों और नदियों के रुप में बहता है। तथा मैदानों की सिंचाई करता और सभी प्राणियों की प्यास बुझाता हुआ पुन: समुद्र में जाकर मिल जाता है। यह जल-चक्र शाश्वत है। इस प्रकार प्रकृति ने जल-संचय की यह बहुत ही अनोखी व्यवस्था की है।

14.

(अ) संगति के लाभ – संकेत-बिन्दु – संगति का महत्व, संगति के प्रकार, सत्संगति से लाभ, कुसंगति का दुष्प्रभाव।

उ. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इसलिए वह समाज के बिना नहीं रह सकता। समाज में रहने के कारण वह किसी-न-किसी की संगति में जरूर रहेगा। इसलिए मानव जीवन पर संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है। कोई व्यक्ति जन्म से अच्छा या बुरा नहीं होता है। वह संगति में रहकर ही अच्छा या बुरा बनता है। संगति दो प्रकार की होती है- इसमें पहली है सत्संगति अर्थात अच्छे लोगों की संगति तथा दूसरी है। कुसंगति अर्थात बुरे लोगों की संगति कुछ लोग अच्छी संगति के कारण अच्छाई की तरफ़ जाते हैं और कुछ बुरी संगति के कारण अवगुणों की तरफ़ जाते हैं। अच्छी संगति में रहने वाला व्यक्ति सदा सत्यवादी, ईमानदारी तथा विश्वास के योग्य होता है। सत्संगति वाला व्यक्ति चरित्रवान होता है। चरित्र की श्रेष्ठता ही उसे श्रेष्ठता प्रदान करती है। सत्संगति पाकर वह अपने जीवन को आदर्श बना लेता है तथा सुख शांति और संतोष से जीता हैं सत्संगति सज्जनों की संगति है, जो हर तरह से वदंनीय तथा गुणों का ख़ज़ाना होते है, जो अवगुणों को सद्गुणों में बदलते हैं वे समाज के उत्तम प्रकृति के व्यक्ति होते हैं। बुरी संगति का प्रभाव किसी भी व्यक्ति पर बड़ी आसानी से पड़ जाता हे। कहा जाता है कि दो राहें होती हैं। एक रास्ता कठिन दूसरा सरल है। कठिन रास्ता सदैव सत्य की ओर और सरल रास्ता असत्य और बुराई की ओर जाता है। अत: बुराई व अवगुणों का प्रभाव बड़ी सरलता से पड़ जाता है। यदि आप कुसंगति वाले के साथ कुछ देर के लिए खड़े भी हो गए, तो जिन लोगों ने आपको उनके साथ खड़े देखा है तो उनकी नज़रों में आप भी कुसंगति वाले हो जाते हैं।

(ब) समय का सदुपयोग – संकेत – बिंदु – समय का महत्व, समय के सदुपयोग से लाभ, सफलता का आधार।

उ. समय बहुत अमूल्य होता है। सोने, चाँदी, हीरे आदि हर एक चीज़ का मूल्य लगाया जा सकता है लेकिन समय की कोई कीमत नही लगाई जा सकती। समय का प्रत्येक क्षण अमूल्य होता है। पैसे-रूपयों को हम बैंक या कहीं और जमा कर सकते हैं। लेकिन समय टिकाऊ नहीं होता और वह किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता है। वह इतना तीव्रगामी है कि उसे कोई वायुयान तक नहीं पकड़ सकता है। अगर कोई पकड़ सकता है, तो सिर्फ़ वह जो उसकी गतिविधि पर दृष्टि जमाए हुए उसके प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करता है। कबीरदास जी ने समय के संबंध में कहा है-

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परले होयगी, बहुरि करौगे कब।।

अर्थात हमें जो काम कल करना है, उसे आज ही कर लेना चाहिए और कार्य आज करना है, उसे तुरंत करना चाहिए जिन्होंने जीवन के एक-एक पल का सदुपयोग किया है, वे ही सफलता के शिखर पर पहुँच सके हैं। समय का सुदपयोग ही सफलता का आधार है। जो व्यक्ति समय का दुरूपयोग करते है, वे हमेशा असफल होते हैं और उन्हें अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। धन एक बार चले जाने से उसे फिर प्राप्त किया जा सकता है लेकिन बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता है। जो इस रहस्य को समझ लेता है, वह कभी असफल नहीं होता है। समय ही वह कसौटी है जिस पर मनुष्य के जीवन को परखने से उसकी सफलता और असफलता की परीक्षा होती है।

(स) संतोष का महत्व – सकेंत बिन्दु- संतोष का महत्व, असंतुष्टि के कारण, लोभ पाप का मूल है, संतोष ही सबसे बड़ा धन।

उ. मनुष्य का मन स्वभाव से बहुत ही चंचल होता है। मनुष्य के मन में अनेक प्रकार की लालसाएँ तथा इच्छाएँ उठती रहती है। जिसका कोई अंत नहीं होता है। उसकी एक इच्छा के समाप्त होते ही दूसरी इच्छा का जन्म हो जाता है। यह सिलसिला चलता ही रहता है। जिस व्यक्ति का मन संतुष्ट होता है वह धनवान है और जिस व्यक्ति का मन संतुष्ट नहीं होता वह व्यक्ति बिलकुल निर्धन है, चाहे उसके पास सभी साधन क्यों न हों। कबीरदास का कथन है, ''संतोष रूपी धन के सामने अन्य सभी धन मिट्टी के समान है।'' जिस व्यक्ति के पास संतोष रूपी धन आ जाता है, उसे किसी और धन को प्राप्त करने की इच्छा नहीं रहती। आज के मानव में दूसरे लोगों को खुश देखकर ईर्ष्या की भावना पैदा होती है। ईर्ष्या की भावना के कारण ही मनुष्य के जीवन में असंतोष देखा जा सकता है। आज के समय में व्यक्ति धन कमाने के चक्कर में बुरे-से -बुरा काम करने में संकोच का अनुभव नहीं करता है, क्योंकि उसमें पैदा हुआ लालच उसे उसकी बुराई के बारे में सोचने ही नहीं देता। आज का मानव धन के लालच में पड़कर मानव की जगह दानव बन चुका है। हमारे समाज में होने वाले सभी अपराधों के पीछे धन पाने की लालसा ही है। हम लोगों का जीवन और अधिक पाने की लालसा में ही भटकता रहता है। इसके विपरीत जिस व्यक्ति का अपनी इच्छाओं के ऊपर नियंत्रण होता है, वह व्यक्ति तो दुनिया का सारा सुख अपने काबू में कर लेता है। वह निर्धन होते हुए भी सुख का अनुभव करता है, लेकिन जो व्यक्ति अपनी इंद्रियों तथा इच्छाओं को काबू में नही कर पाता, वह व्यक्ति जीवन भर अशांति का जीवन व्यतीत करता है। धन की जितनी अधिक इच्छा होगी, लोभ का उतना ही अधिक जन्म होगा। लोभ पाप का मूल होता है। जो लोग धन से ऊपर किसी भी चीज़ को नहीं मानते हैं, वे धन को प्राप्त करने की इच्छाओं पर काबू नहीं रख पाते। ऐसे लोग धनी होने पर भी सदा दुखी रहते हैं। इसलिए मन का संतोषी व्यक्ति धनी है। जबकि अंसतोषी व्यक्ति सभी सुख-सुविधाओं के होते हुए भी निर्धन है।

15. वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आने पर छोटी बहन को बधाई पत्र -

उ. सी-77, कमलानगर,

अलीगढ़।

दिनांक : 22 नवंबर, 20××

प्रिय नताशा,

मधुर स्नेह।

मैं यहाँ सकुशल हूँ, आशा करता हूँ कि वहाँ भी सब सानंद होंगे। कल माँ का फोन आया था, जिससे पता चला कि तुम अंतविद्यद्यालयीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आई हो। सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई। इस शानदार सफलता पर मेरी और से तुम्हें बहुत बहुत बधाई। तुम वाक्कला में बचपन से ही बहुत पटु हो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम भविष्य में बहुत अच्छी वक्ता बनोगी।

शिक्षणेतर गतिविधियों के साथ साथ अपनी पढ़ाई का भी पूरा ध्यान रखना। मैं शीघ्र ही तुम्हारे लिए एक बहुत सुंदर उपहार लेकर आऊँगा। मेरी और से माता जी और पिता जी को चरणस्पर्श कहना। एक बार पुन: बधाई।

तुम्हारा बड़ा भाई

शुभम

अथवा

परीक्षा भवन

दिल्ली

दिनांक 20 अगस्त, 20xx

सेवा में

संपादक महोदय

दैनिक जागरण

दिल्ली

विषय सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के संदर्भ में।

महोदय

मै आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से सरकार और समाज का ध्यान बढ़ती हुई सड़क दुर्घटनाओं की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आशा है कि आप इसे जनहित में अवश्य प्रकाशित करेंगे।

इन दिनों दिल्ली में सड़क दुर्घटनाएँ काफी बढ़ गई हैं। वाहन चालक यातायात के नियमों का खुला उल्लंघन करते हैं। उन्हें रोकने-टोकने वाला कोई नहीं है।

दुर्घटनाओं को रोकने के संबंध में मैं निम्नलिखित सुझाव देना चाहता हूँ-

(i) प्रात: 8 से 12 बजे तक तथा सायं 5 से 8 बजे तक सभी व्यस्त चौराहों पर यातायात पुलिस के सिपाही उपस्थित रहें और वे नियम का उल्लंघन करने वालों का चालान करें।

(ii) वाहन चलाते हुए मोबाइल से बात करने वालों का तुरंत चालान कर देना चाहिए।

(iii)दो बार से अधिक कोई भी नियम भंग करने वाले चालक का ड्राइविंग लाइलेंस जब्त कर लिया जाना चाहिए।

(iv)ऐसे वाहन चालक को पुरस्कृत किया जाना चाहिए, जो अपने वाहन को निर्धारित गति सीमा में चलाते हों तथा किसी प्रकार के नियम भंग न करते हों।

(v) जनता से ऐसे वाहन चालकों के वाहन नंबर नोट करके यातायात पुलिस को देने की अपील करनी चाहिए, जो सड़क पर वाहन चलाते समय नियमों का उल्लंघन करते हों।

धन्यवाद

भवदीय

क.ख.ग.

16. गंगोत्री बोतलबंद पानी का विज्ञापन –

अथवा

'विश्व योग दिवस का विज्ञापन'

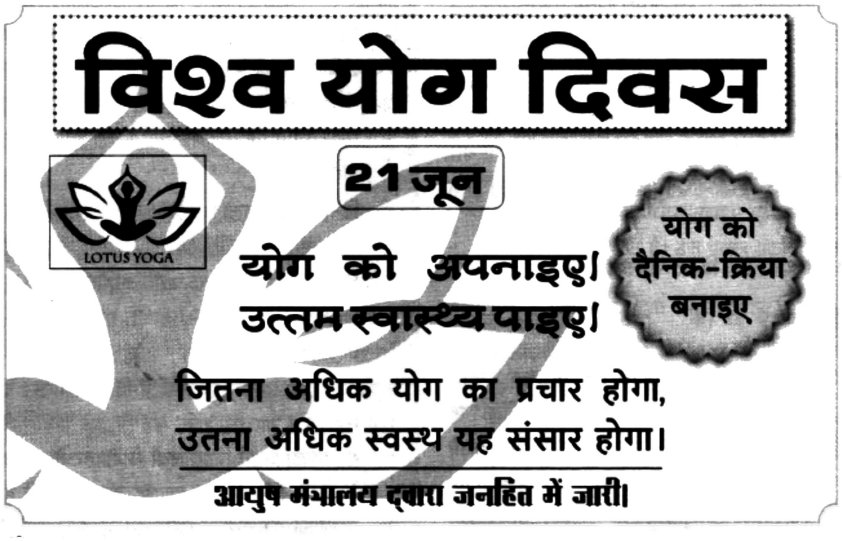

17. **'पोंगल' पर शुभकामना-संदेश –**

प्रेषक : क. ख. ग.

दिनांक : 14 जनवरी, 20××

सूर्यदेव का मिला उपहार,

धरा बनी धन का भंडार।

गौ माता की जय जयकार,

आया पोंगल का त्यौहार।

पोंगल की हार्दिक शुभकामनाएँ।

अथवा

'स्वतंत्रता दिवस' पर शुभकामना - संदेश -

प्रेषक : क. ख. ग.

दिनांक : 15 अगस्त, 20XX

पराधीनता से बड़ा, नहीं है कोई पाप्

पराधीनता मानव रहे, यह एक अभिशाप।

स्वाधीनता से बड़ा, नहीं कोई वरदान्

प्राणों के बदले मिले, तो भी सस्ती जान।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

ALLEN